P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-II*October-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# धर्मशास्त्र, शिक्षा और साहित्य के सन्दर्भ में महर्षि वात्स्यायन द्वारा लिखित 'कामसूत्र' का स्वरुप तथा महत्व

**अनिल कुमार**
असिस्टेन्ट टीचर,
बेसिक शिक्षा विभाग,
जे0 एच0 एस0 सिहानी,
फरीदपुर, अलीगढ़

**सारांश**

प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य धर्मशास्त्र, साहित्य और शिक्षा के सम्बन्ध में कामसूत्र के महत्व तथा स्वरुप का अध्ययन करना हैं इसके लिये अनुसंधाता ने कामसूत्र में वर्णित शिक्षा, धर्म तथा साहित्य सम्बन्धी विचारों का सांगोपांग अध्ययन किया तथा उसके आधार पर कुछ सामान्यीकरण करने का प्रयास किया है। प्रपत्र को सारांशित करते हुए कहा जा सकता है कि प्राचीन भारत से आज तक जो भी विकास धर्म, शिक्षा तथा साहित्य में हुआ है, उनके विकास में कामसूत्र का बहुत बड़ा योगदान है अर्थात् यह कामशास्त्र समस्त साहित्य कला तथा धार्मिक आचरणों के आधार प्रदानकर्ता के रूप में भूमिका निभाता रहा है।

**मुख्य शब्द** :धर्मशास्त्र – धार्मिक आचरणों का लेखाजोखा रखने वाले ग्रन्थ, साहित्य – भावप्रवाहिता का भाषाई माध्यम गद्य तथा पद्य; शिक्षा – मानवनिर्माण की प्रक्रिया।

**प्रस्तावना**

महर्षि वात्स्यायन का प्राचीन भारतीय मनीषियों में विशिष्ट स्थान है क्योंकि उन्होंने जीवन के अतिमहत्वपूर्ण तथा विद्वानों द्वारा अनछुऐ पुरुषार्थ चतुष्टय में वर्णित 'काम' सोपान की विषद तथा वैज्ञानिक व्याख्या की है। महर्षि वात्स्यायन का असली नाम श्री मल्लनाग था। वात्स्यायन गोत्र में जन्म लेने के कारण इनको वात्स्यायन के नाम से जाना गया। कुछ विद्वानों का मत है कि आचार्य कौटिल्य तथा वात्स्यायन एक ही व्यक्ति थे। परन्तु आज भी महर्षि वात्स्यायन का जीवन काल अनुसंधाताओं के लिये एक पहेली बना हुआ है और इस पर निरन्तर शोध कार्य प्रगति पर है। प्रस्तुत शोध लेख का मुख्य उद्देश्य महर्षि का जीवनकाल न होकर कामसूत्र में वर्णित उनके विचारों के महत्व तथा स्वरूप का धर्मशास्त्र, शिक्षा और साहित्य के सन्दर्भ में विवेचित तथा संश्लेषित करना है। इस कार्य हेतु अनुसंधाता ने महर्षि वात्स्यायन द्वारा लिखित कामसूत्र का विषद विश्लेषण किया तथा उसके आधार पर शोध पत्र के उद्देश्यों को निष्कर्षित करने का प्रयास किया है।

आदिकाल में प्रजापति ने सृष्टि की रचना करके उसकी रक्षा तथा व्यवस्था के लिये अर्थ, धर्म, काम तथा मोक्ष के लिये एक लाख अध्यायों का विधान किया। इन्हीं के आधार पर स्वयंभुव मनु ने अर्थ तथा धर्म विषयों के लिये मनुस्मृति की रचना की तथा महर्षि बृहस्पति ने अर्थशास्त्र की रचना की थी। इस प्रकार शिवजी के नन्दी नामक गण ने प्रजापति के ग्रन्थ से काम नामक विषय को अलग करके उसका नाम 'कामशास्त्र' रखा। नंदी द्वारा रचित कामशास्त्र एक हजार अध्यायों में विभक्त है। नन्दी के पश्चात इस विषय पर श्वेतकेतु, वाभ्रात्य दत्तक तथा महर्षि वात्स्यायन ने इस शास्त्र के विकास में महनीय योगदान किया है।

महर्षि वात्स्यायन ने धर्म, अर्थ तथा काम का स्मरण करते हुये कहा है कि मैं धर्म, अर्थ तथा काम को नमस्कार करता हूँ। वह कहते हैं कि कामशास्त्र में मानव की मूल आवश्यकताओं का उल्लेख किया गया है। अतः यह मूल स्वाभाविक तथा विचारणीय विषय है। महर्षि कहते हैं कि प्रजापति ब्रह्मा ने स्वयं सृष्टि के सफल संचालन हेतु एक लाख अध्यायों में कामशास्त्र का वर्णन किया है। महर्षि वात्स्यायन का कहना है कि चतुवर्ग के स्थान पर त्रिवर्ग को ही महत्व दिया जाना चाहिये क्योंकि मोक्ष तो जीवन से परे मृत्यु पश्चात आत्मा तथा परमात्मा की मिलन अवस्था का द्योतक है। अतः वर्तमान जीवन में उसकी अनुभूति नहीं की जा सकती। अतः इस ओर कम ध्यान दिया जाना चाहिये।

महर्षि वात्स्यायन के अनुसार काम एक महत्वपूर्ण मानसिक शक्ति हे जिसके दो रूप हैं –

1. बाह्य रूप भौतिक कार्यों में प्रकट होने वाली तथा
2. आन्तरिक रूप अन्तःकरण की क्रियाओं द्वारा प्रकट होने वाली चैतन्य शक्ति के रूप में।

आनन्द का वास्तविक केन्द्र स्थान तो एकमात्र उपस्थ स्त्री–पुरुष के जनन अंग योनि तथा लिंग हैं। अन्य सभी पदार्थ धन लोक आदि तो इस आनन्द को बढ़ाने के साधन मात्र हैं। जीवन की पूर्णता तथा अपूर्णता का मानदण्ड आनन्द प्राप्ति ही है और इस आनन्द का स्त्रोत 'विषय भोग' ही है। इच्छित विषयों के भोग होने पर व्यक्ति अपने जीवन को कृतार्थ समझता है। काम ही सृष्टि का आधार है। इसी को शिव–शक्ति के रूप में जाना जाता है।

कामसूत्र के महत्व के सम्बन्ध में पण्डित माध्वाचार्य जी ने कामसूत्र के मूल सूत्रों की बड़ी विद्वता से कुछ प्रश्नों का विचार किया है जैसे पुरुषार्थ तीन हैं या चार, मानव जीवन में काम का क्या महत्व है, कामशास्त्र क्यों आवश्यक है तथा साहित्य और कामशास्त्र का क्या सम्बन्ध है। अतः हम अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिये इन सभी प्रश्नों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे।

**कामशास्त्र का महत्व**

कामशास्त्र भी धर्मशास्त्र की तरह ही महापुरुषों द्वारा प्रवृत्त किया गया है। वात्स्यायन ने संसारी पुरुषों की लोकयात्रा सकुशल चलाने के लिये निर्विकल्प समाधि से कामशास्त्र के पदार्थों का अनुभव किया। काम का साम्राज्य तो संसार के समस्त पदार्थों में है। जड़–चेतन कोइ भी ऐसा नहीं बचा जो काम के शासन के सामने नतमस्तक न हुआ हो। अनेक ऋषि महात्मा संत तथा सिद्ध योगी जो सदैव ब्रह्म ज्ञान का चेतनामृत पान करते थे वह भी कामदेव की प्रभावकारिता से स्वयं को मुक्त नहीं कर सके। यही नहीं, मानव योनि के अलावा भी समस्त जीवन जन्तुओं के जीवन संतति को आगे बढ़ाने में काम का अतिमहत्वपूर्ण योगदान रहा है। निराकार ब्रह्म की प्रथम इच्छा से ही काम का प्रारम्भ माना जाता है। 'एकोअहंम बहु श्याम' अर्थात् मैं एक हूँ, अनेक हो जाऊँ। जहाँ इच्छा है वहाँ काम है। अर्थात् काम और इच्छा एक ही हैं। पृथक नहीं। अर्थात! काम ही जगदीश्वर के हृदय में उत्पन्न होकर सृष्टि का आधार बनता है तो फिर इसको धर्म से पृथक नहीं माना जा सकता। अर्थात् धर्म की उत्पत्ति को काम प्रवृत्ति में उदात्तीकरण की क्रमागत प्रक्रिया के रूप में भी जाना जा सकता है। काम की अनुचित प्रवृत्ति पर रोक करना तो भी ऋषि मुनियों ने चाहा और अनेक प्रकार के साधन काम को बाधित करने हेतु बताये परन्तु वात्स्यायन जैसे काम वैज्ञानिक ने इन सभी को नकारते हुये काम प्रवध तथा पूर्ण तुष्टि हेतु अनेक अभिकथ्यों का अनुष्ठान किया जिससे कि जीवन को सुखमय और सन्तुष्ट बनाया जा सके। अनेक विद्वान इस बात का आक्षेप वात्स्यायन पर लगाते हैं कि उन्होंने मोक्ष की अवहेलना की है। इसका उत्तर स्वयं वही इस सूत्र में देते हैं कि, 'स्थविरेधर्म मोक्षं च' अर्थात् वृद्धावस्था में धर्म और मोक्ष का सेवन करना चाहिये। महर्षि वात्स्यायन अपने कामसूत्र में केवल काम पर ही बल नहीं देते हैं बल्कि वह काम को अर्थ, धर्म और मोक्ष के साथ अनुबन्धित करके चले हैं। अर्थात् यह शास्त्र लौकिक तथा पारलौकिक दोनों अवस्थाओं को साधता है। इसी हेतु वात्स्यायन श्री रामचन्द्र जी का उदाहरण देते हैं कि जिस प्रकार श्रीराम जानकी का प्रेम लौकिक तथा पारलौकिक दोनों को साधता है। सामान्य जन भी काम को उसी रीति से सेवन करें।

कामशास्त्र और शिक्षा–प्राचीन काल में भारतीय शिक्षा की पाठ्यक्रम लौकिक तथा पारलौकिक दो भागों में बँटा हुआ था अर्थात् वेद वेदांगों के साथ विद्यार्थी कामशास्त्र का भी अध्ययन अनिवार्य रूप से करते थे। तभी तो वह लौकिक जीवन में सफलता पाते थे। ऐसे छात्र जो कामशास्त्र और दर्शन का ज्ञान प्राप्त करके गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करते थे तो जीवन में अधिक कुशल रूप में अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते थे। पुरुषों के साथ–साथ काम शिक्षा बालिकाओं के लिये भी अनिवार्य थी। वात्स्यायन ने विद्या समुद्देश्य प्रकरण में बालिकाओं के काम शिक्षकों को बतलाया है। बालिकाएँ उनकी बातों का एकान्त में अभ्यास करती थीं। यह बात साधारण गृहस्थ से लेकर राजघरानों तक एक जैसी ही प्रचलित थी। इसी प्रकार के उदाहरण ब्रह्मणा रूपी अर्जुन ने उत्तरा को इसी प्रकार का उदाहरण मिलता है। महाराजा दुष्यन्त की रानियों की काम कला का साक्षी कालिदास की कविताओं से मिलता है। अग्निमित्र तथा मालविका, आदि उदाहरण मिलते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि भारत में पहले भी कामसूत्र का पूर्णज्ञान कराया जाता था। बात मण्डन मिश्र की हो या शंकराचार्य की हो इनके आध्यात्म ज्ञान को आगे बढ़ाने में कामशास्त्र में निपुण महिलाओं का योगदान किसी से छिपा नहीं है। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि प्राचीन भारत में कोई भी नारी कामशास्त्र के ज्ञान से शून्य नहीं थी। सभी गृहदेवियाँ अपनी अपनी शक्ति के अनुसार कामशास्त्र का ज्ञान रखती थीं। भारत में जब इसका पहले जैसा घर–घर प्रचार होगा तब ही भारतीयों की लोकयात्रा उत्तम बनेगी।

वर्तमान समय में भी अनेक कानून बनाकर इन सब कामशास्त्र सम्बन्धी कानूनों को "Sex Education" के रूप में लागू करने का प्रयास किया जा रहा है।

**साहित्य तथा कामशास्त्र**

साहित्य कामशास्त्र का अंग है ऐसा दार्शनिक विद्वानों का मत है जिस काव्य में स्त्रियों की विलास लीलायें कविता के रूप में दिखाई गई हैं जो कि नायक नायिका के संयोग–वियोग का प्रतिपादन करते हैं। उनको कामशास्त्र का अंग मानना ही उचित है। आज हम जिस साहित्य को पढ़ते हैं उसके यथार्थ ज्ञान से कोसों दूर हैं। अंगी के बिना अंग की क्या आभा है। कामशास्त्र अंगी के ज्ञान के बिना साहित्य का पूर्ण बोध नहीं हो सकता। हम इस वर्तमान के ढंग और दार्शनिकों के निश्चय से इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि साहित्य कामशास्त्र का ही एक अंग है। अतः बिना कामशास्त्र के ज्ञान के साहित्य अधिक अंगों में विफल ही रहता है। साहित्य तथा कामसूत्र ये दोनों आपस में बहुत निकट हैं। किसी को भी संदेह नहीं होना चाहिये। कविता करने में लोक व्यवहार का ज्ञान आवश्यक है तथा कामसूत्र लोक व्यवहार ज्ञान का भण्डार है। आज तक श्रृंगार रस पर जितना भी साहित्य सृजन हुआ है वह सब कामसूत्र का ही भाग है।

साहित्य में पुरुषायित की अच्छी छटा देखने में आती है। संग्रह ग्रन्थों में इस विषय की अनेक कवितायें देखने में आती हैं। गीत गोविन्द इसका सर्वोत्तम उदाहरण है। महाकवि माद्य तथा कालिदास ने भी कामसूत्र की प्रक्रियाओं का अपनी रचनाओं में बहुत अधिक प्रयोग किया है। विवाह के प्रकारों की विषद व्याख्या तथा कन्या तथा युवक के गुणों पर भी कामसूत्र में बहुत चर्चा की गई है। यह सब साहित्य में भी इसी प्रकार देखा जाता है। साथ ही गृहणी जीवन में भी जो कुछ धर्मशास्त्रों में बताया गया है, कामसूत्र ने उसको अपनी समितियों के साथ रख दिया है। इस प्रकार कामसूत्र या कामशास्त्र पर ही साहित्य आश्रित है। प्राचीन कवि इसे पढ़कर ही कविता करने में विश्वास करते थे। भवभूति तथा कालिदास के विषय में पाश्चात्य विद्वानों का यही मत है कि ये कामसूत्र जानते थे। प्राचीन कवियों की सांगोपांग कवितायें कामसूत्र के आधार पर ही बनी थीं।

**उद्देश्य**

महर्षि वात्स्यायन के ग्रन्थ कामसूत्र का धर्मशास्त्र, शिक्षा और साहित्य के सन्दर्भ में अध्ययन एवं उसकी उपयोगिता।

**निष्कर्ष**

आदिकाल में सर्वप्रथम प्रजाति ब्रह्मा ने स्वयं सृष्टि के सफल संचालन हेतु एक लाख अध्यायों में कामशास्त्र का वर्णन किया। प्रजापति रचित शास्त्र से स्वयंभुवमनु ने मनुस्मृति और बृहस्पति ने अर्थशास्त्र नामक ग्रन्थ की रचना की। प्रजापति के ग्रन्थ से शिवजी के नन्दीनामक गण ने कामशास्त्र को अलग कर एक हजार अध्यायों में विभक्त किया, नन्दी द्वारा रचित कामशास्त्र को उद्दालक के पुत्र स्वेतकेतु ने पाँच सौ अध्यायों में लिखा। स्वेतकेतु के ग्रन्थ को पाँचाल देश के निवासी वभ्रु के पुत्र बाभ्रव्य ने एक सौ पचास अध्यायों को सात अधिकरणें में विभक्त कर कामशास्त्र की रचना की। महर्षि वात्स्यायन ने बाभ्रव्य द्वारा रचित कामशास्त्र के प्रत्येक अधिकरण का सार लेकर कामसूत्र नामक ग्रन्थ की रचना की। महर्षि वात्स्यायन ने धर्म, अर्थ तथा काम का महत्व बताते हुए कहा है कि मैं धर्म, अर्थ तथा काम को नमस्कार करता हूँ क्योंकि सृष्टि का विकास इन्हीं में निहित है। निराकार ब्रह्मा की प्रथम इच्छा से ही काम का प्रारम्भ हुआ। काम ही जगदीश्वर के हृदय में उत्पन्न होकर सृष्टि का आधार बनता है। वात्स्यायन के अनुसार काम को धर्म से पृथक नहीं किया जा सकता। कामशास्त्र भी धर्मशास्त्र की तरह महापुरुषों द्वारा प्रवृत्त किया गया है। काम का साम्राज्य तो संसार के समस्त पदार्थों में व्याप्त है। साहित्य भी कामशास्त्र का ही अंग है। श्रृंगार रस पर जितना भी साहित्य सृजन हुआ है वह सब कामसूत्र का ही भाग है। अतः हम कह सकते हैं कि धर्म, शिक्षा तथा साहित्य के क्षेत्र में वात्स्यायन के कामसूत्र का बहुत बड़ा योगदान है।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

1. पण्डित माधवाचार्य : कामसूत्रम् (भाग–2), खेमराज श्री कृष्णदास प्रकाशन, बम्बई–4, 1999
2. डॉ0 रामचन्द्र वर्माशास्त्री : कामसूत्र, मनोज पब्लिकेशन, चाँदनी चौक,दिल्ली–6, 2008
3. जीवन के लिए शिक्षा, शिक्षकों तथा विद्यार्थियों हेतु पारिवारिक स्वास्थ्य एवं जीवन–कलाओं की शिक्षा का गाइड, उ0प्र0 शासन
4. राज्य माध्यमिक शिक्षकों की कार्य–पुस्तिका : विद्यालय एड्स शिक्षा कार्यक्रम, यूनिसेफ, यूनिसेफ भवन 73, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली
5. शिक्षा आयोग की रिपोर्ट, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
6. विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948–49), शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
7. Research in Education, Best J.W., New Delhi
8. S.V.C. Arya:The Fourth Indian Year Book of Education, New Delhi, Jan. 1972.
9. Encyclopedia X. Xarris,Chistrew: Encyclopedia of Educational Research, New York, The Macmillan Company, Third Edition, 1960.
10. Educational Ideas and Institutions in Ancient India : Janki Prakashan, Patna, 1979.